International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 04-11-2020; Accepted: 18-11-2020; Published: 04-12-2020
www.hindijournal.com
Volume 6; Issue 6; 2020; Page No. 118-119

उर्मिला शुक्ल का व्यक्तित्व और कृतित्व

शिल्पी कुमारी[1], डॉ. रेशमा अंसारी[2]
शोधार्थी, हिन्दी विभाग, मैट्स विश्वविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत
प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, हिन्दी, मैट्स विश्वविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

सारांश
हिन्दी साहित्य को समृद्ध करने में छत्तीसगढ़ राज्य के साहित्यकारों की भी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। इनमें प्रसिद्ध महिला साहित्यकार डॉ. उर्मिला शुक्ल के योगदान को भी विस्मृत नहीं किया जा सकता जिन्होंने हिन्दी के साथ–साथ छत्तीसगढ़ी साहित्य को भी समृद्ध किया है। उनकी अधिकांश रचनाओं में नारी केंद्र में है किन्तु उन्होंने छत्तीसगढ़ राज्य के प्राकृति वैभव, राज्य की संस्कृति, लोकगीतों और विभिन्न सामाजिक समस्याओं को भी अपनी रचनाओं के माध्यम से अभिव्यक्त किया है। उनकी रचनाओं में उनके व्यक्तित्व की भी स्पष्ट झलक देखने को मिलती है। प्रस्तुत शोध पत्र में उर्मिला जी के व्यक्तित्व और कृतित्व पर सारगर्भित प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है।

मूल शब्द: व्यक्तित्व, कृतित्व, छत्तीसगढ़ी साहित्य

प्रस्तावना

साहित्य समाज के यथार्थ का बोध कराता है। प्राचीन भारतीय वाङमय से लेकर आज तक स्त्री विमर्श किसी न किसी रूप में विचारणीय विषय रहा है। भारतेन्दु कालखण्ड से लेकर आज तक के सभी उपन्यासों पर दृष्टिक्षेप डाले तो यह स्पष्ट होता है कि अधिकांश उपन्यासकारों ने अपने उपन्यासों में कुछ–कुछ ऐसे नारी पात्रों की योजना की है जो नारी के शोषण, उन पर होने वाले अन्याय अत्याचार, विभिन्न समस्याएं उनसे मुक्ति अपने स्व की खोज आदि को व्यक्त करने में सक्षम है। छत्तीसगढ़ के साहित्यकारों ने भी नारी समस्या एवं नारी के विभिन्न रूपों को अपनी रचनाओं के केंद्र में रखा है। इनमें छत्तीसगढ़ के साहित्यकारों ने भी नारी समस्या एवं नारी के विभिन्न रूपों को अपनी रचनाओं के केन्द्र में रखा है। इनमें छत्तीसगढ़ की प्रसिद्ध महिला साहित्यकार डॉ. उर्मिला शुक्ल का नाम प्रथम स्थान पर लिया जा सकता है जिनके उपन्यास, कविताओं, कहानियों में स्त्री जीवन से संबंधित विभिन्न समस्याओं के चित्रण के साथ–साथ नारी मुक्ति के प्रश्न भी उठाये गये हैं। डॉ. उर्मिला शुक्ल जी ने छत्तीसगढ़ और हिन्दी दोनों में लेखन कार्य किया है और उनका लेखन अनवरत जारी है।

उर्मिला जी का व्यक्तित्व बहुआयामी व्यक्तित्व के रूप में उभरकर हमारे सामने आता है और उनका लेखन स्त्री के लिये संजीवनी का काम करता है। डॉ. उर्मिला शुक्ल जी का जन्म 20 सितम्बर सन् 1962 को रायपुर (छत्तीसगढ़) में हुआ है। उर्मिला शुक्ल जी ने सर्वोच शिक्षा प्राप्त की है। उर्मिला शुक्ल जी ने अपनी शिक्षा में एमए., पी.एच.डी. की उपाधि ग्रहण की है तथा उर्मिला शुक्ल जी को छत्तीसगढ़ की प्रथम महिला डी–लिट् होने का भी गौरव प्राप्त है। डॉ. उर्मिला शुक्ल जी ने "स्वांतत्र्योत्तर हिन्दी कहानियों में रूप एवं वस्तुगत परिवर्तन का आकलन" विषय पर सन् 1999 में डी–लिट् की उपाधि प्राप्त की है। इस उपलब्धि पर उर्मिला जी को भारतेन्दु साहित्य समिति बिलासपुर द्वारा सम्मानित किया गया था। इसके पूर्व डॉ. उर्मिला शुक्ल जी ने 1987 में "भगवती प्रसाद वाजपेयी के कथा साहित्य में सामाजिक समस्याएँ" विषय पर पी. एच. डी. की उपाधि प्राप्त की थी। छत्तीसगढ़ी भाषा एवं साहित्य अवधि भाषा एवं साहित्य पर उन्होंने विशेष कार्य किया है। उर्मिला शुक्ल जी का हिन्दी कहानी जगत खासकर महिला कथा लेखन में बहुत जाना–पहचाना नाम है। उर्मिला शुक्ल जी की रचनाओं में स्त्री मुद्दो को लेकर लिखी गई कहानियों में स्त्री संघर्ष का जीवंत चित्रण मिलता है।

छत्तीसगढ़ में महिला लेखन के क्षेत्र में प्रथम प्रकाशित कहानी "संग्रह गोदना के फूल" बहुत लोकप्रिय रहा है जिसमें उर्मिला शुक्ल जी ने स्त्री विमर्श का सूक्ष्म अंकन किया है। उर्मिला जी का कविता संग्रह "छत्तीसगढ़ के अउरत" भी स्त्री विमर्श पर केन्द्रित संग्रह है तथा उर्मिला जी का खण्ड काव्य "महाभारत में दुरपति" और छत्तीसगढ़ी कहानियों का संकलन भी समाज को नई प्रेरणा प्रदान करता है। उर्मिला जी का साझा कहानी संग्रह "अपने–अपने मोर्चे पर फूलकुँवर तुम जागती रहना तथा मैं फूलमती और हिजड़े तथा साझा कहानी संग्रह बीसवीं सदी की महिला कथाकारों की कहानियाँ दस खण्डों में प्रकाशित है। डॉ. उर्मिला शुक्ल को कलमकार फाउण्डेशन दिल्ली द्वारा 2015 में अखिल भारतीय कहानी प्रतियोगिता में पुरस्कृत कहानियों के संग्रह में उनकी कहानी 'सल्फी का पेड़ नहीं औरत' को पुरस्कार के लिये चुना गया तथा ये छत्तीसगढ़ से चुनी जाने वाली एकमात्र कहानी है। बस्तर पर आधारित ये कहानी छत्तीसगढ़ को रेखांकित करती है। उर्मिला जी की कहानियां 'सिर्फ महिलायें' (हंस), 'बंसवा फुलाइल मोरे अँगना' तथा कविता संग्रह" इक्कीसवीं सदी के द्वार पर 'छत्तीसगढ़ी लोकगीतों में नारी चेतना से विमर्श तक' (समीक्षा) आदि में स्त्री जीवन की वास्तविक परिस्थितियों को समग्रता के साथ अभिव्यक्त किया गया है। उर्मिला शुक्ल जी ने कविता, कहानी, उपन्यास, समीक्षा आदि साहित्य की लगभग सभी विधाओं में महत्वपूर्ण लेखन कार्य किया है। उर्मिला शुक्ल जी जब साहित्य की विद्यार्थी थीं तब से ही साहित्य के प्रति उनका गहरा लगाव था। लेकिन उन्होंने लेखन कार्य बहुत समय पहले प्रारंभ कर दिया था। उर्मिला शुक्ल बताती हैं कि 'एम.ए. के पश्चात एक इंटरव्यू की भीड़ देखकर मैंने 'इंटरव्यू' नामक एक कविता लिखी थी। ये मेरी पहली कविता थी और यह आकाशवाणी रायपुर के युववाणी में प्रसारित हुई थी।' इसके बाद से उनका अनवरत लेखन कार्य जारी है। उर्मिला शुक्ल जी ने अपनी रचनाओं में नारी पात्रों के माध्यम से नारी के आर्थिक, सामाजिक, शारीरिक समस्याओं को समाज के समक्ष उजागर करते हुए नारी शक्ति की महत्ता को जागृत करने

का प्रयास किया है। उर्मिला शुक्ल जी को अपने साहित्य रचना के लिए बहुत से पुरस्कार एवं सम्मान का गौरव प्राप्त है।

प्रमुख कृतियाँ

उर्मिला शुक्ल जी की महत्वपूर्ण कृतियों में गुलमोहर, अंतरराष्ट्रीय गजल संग्रह (1994), अपने–अपने मोर्चे पर, कहानी संग्रह (1995), एकता की आवाज, अखिल भारतीय काव्य संग्रह (1998), एकता का संकल्प, अखिल भारतीय काव्य संकलन (1999), इक्कीसवीं सदी के द्वार पर, कविता संग्रह (2001), छत्तीसगढ़ के अउरत, काव्य संग्रह, महभारत म दुरपती, काव्य संग्रह, गोदना के फूल, छत्तीसगढ़ी कहानी संग्रह (2003), मैं फूलमती और हिंजडे, कहानी संग्रह, समीक्षा – हिंदी कहानियों में छत्तीसगढ़ी संस्कृति, हिंदी कहानी में वस्तुगत परिवर्तन प्रमुख रूप से शामिल है।

पुरस्कार एवं सम्मान

डॉ. उर्मिला शुक्ल को साहित्य के क्षेत्र में अनेक सम्मान प्राप्त हुए हैं जिनका विवरण इस प्रकार है – पांडुलिपि पुरस्कार– 'अपने–अपने मोर्चे' के लिए सन् 1995 में पांडुलिपि पुरस्कार मध्य प्रदेश के संस्कृति विभाग द्वारा भोपाल में दिया गया। साहित्य वाचस्पति सम्मान– साहित्य सृजन एवं प्रथम महिला डि.लिट के लिए मध्य प्रदेश साहित्य परिषद द्वारा बिलासपुर में वर्ष 1999 में प्रदान किया गया। हिंदी सेवा समिति, बरगढ़, उड़ीसा द्वारा वर्ष 2000 में अतिथि श्री सम्मान, हिंदी सेवी सम्मान– राष्ट्रभाषा परिषद, भोपाल द्वारा वर्ष 2006 में काव्य के लिये, छत्तीसगढ़ साहित्य के लिए वर्ष 2010 में छत्तीसगढ़ राष्ट्रभाषा प्रचार समिति सम्मान, अखिल भारतीय कविता प्रतियोगिता, भिलाई में वर्ष 2011 एवं वर्ष 2013 में सर्वश्रेष्ठ कविता पुरस्कार, हिंदी कश्मीरी संगम संत सूफी कवि नन्द ऋषि सम्मान वर्ष 2013 में, अखिल भारतीय कहानी–कमल कार फाउंडेशन, दिल्ली द्वारा वर्ष 2014 में कहानी के लिए पुरस्कार, ब्लॉग लेखन के लिए परिकल्पना सम्मान वर्ष 2015 में, उत्तर प्रदेश में वर्ष 2015 में अखिल भारतीय कहानी प्रतियोगिता के अंतगर्त पुष्करणी कथा पुरस्कार, वर्ष 2016 में अंतर्राष्ट्रीय ब्लॉग लेखन के लिए अविनाश वाचस्पति सम्मान, आचार्य का. रत्नलाल विदययानुग स्मृति अखिल भारतीय कविता प्रतियोगिता में वर्ष 2016 में अजमेर शब्द निष्ठा सम्मान, कहानी लेखन के लिए अखिल भारतीय गंगेश्वर उपाध्याय स्मृति सम्मान, कहानी संग्रह 'मैं फूलमती और हिजड़े' के लिए अखिल भारतीय स्पेनिन साहित्य गौरव सम्मान प्रदान किया गया।

संदर्भ ग्रन्थ

1. शुक्ल, उर्मिला, अपने–अपने मोर्चे पर, विद्या साहित्य संस्थान, इलाहाबाद.
2. शुक्ल, उर्मिला, फूल कुंवर तुम जागती रहना, नमन प्रकाशन, दिल्ली, 2015.
3. सैनी, राजकुमार, समसामयिक साहित्य, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 1999.
4. शुक्ल, उर्मिला, छत्तीसगढ़ी लोकगीतों में नारी, वैभव प्रकाशन, रायपुर.